तमस : कथ्य और शिल्प

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)
हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय
महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय
मोतिहारी (बिहार) - 845401
Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातक (प्रतिष्ठा) हिंदी, चौथा सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND3010)

❖ अनुक्रम

- ➢ भीष्म साहनी : एक परिचय
- ➢ तमस
  - ■ कथ्य
  - ■ शिल्प
- ➢ निष्कर्ष
- ➢ सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

❖ भीष्म साहनी : एक परिचय

- 08 अगस्त सन् 1915 ई. को रावलपिन्डी (वर्तमान पाकिस्तान) में
- सन् 1975 ई. में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित
- भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण से अलंकृत
- 11 जुलाई 2003 को दिल्ली में मृत्यु
- झरोखे, कड़ियाँ, मैय्यादास की माड़ी, नीलू नीलिमा निलोफर आदि प्रमुख कृतियाँ

❖ तमस

- सन् 1973 ई. में प्रकाशित
- मूलतः राजनीतिक चेतना का उपन्यास
- राजनीतिक विसंगतियों से उपजी सामाजिक विसंगतियों का चित्रण
- सामाजिक संबंधों के टूटने से लहूलुहान मानवता का चित्रण

❖ प्रमुख समस्याएं

- साम्प्रदायिकता की समस्या
- अंग्रेजों की ‘फूट डालो और राज करो नीति’
- धार्मिक षड्यंत्र
- राजनीतिक स्वार्थ

❖ अन्य विषय

- विभाजन की त्रासदी
- दंगों का प्रभाव
- प्रभावित वर्ग

❖ शिल्प

- **कथानक संयोजन :-**

➢ अनेक कथा-सूत्रों की योजना

➢ सहायक एवं प्रासंगिक कथा-सूत्र, कथा-विकास में सहायक

➢ मुख्य कथा-सूत्र से अन्य कथा-सूत्रों का कुशल संयोजन

➢ रोचक और प्रभावशाली विषय प्रस्तुति में सफल

❖ भाषा एवं शैली:-

- हिन्दी, उर्दू, एवं अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग
- पंजाबी का प्रभाव
- पात्रानुकूल, सहज, बोधगम्य और प्रभावशाली
- कहीं-कहीं चिंतन-प्रधान गंभीरता
- नाटकीयता संपन्न वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक शैली

❖ पात्र एवं चरित्र-चित्रण

- रिचर्ड, अंग्रेजी सत्ता का प्रतिनिधि
- दंगा करवाने वाला मुराद अली, स्वार्थी राजनीतिक वर्ग का प्रतीक
- नत्थू, दंगों में इस्तेमाल होने वाले आम आदमी का प्रतिनिधि
- सजीव और और विश्वसनीय पात्र-योजना

❖ संवाद-योजना

- संवाद-योजना चित्रित परिवेश के अनुकूल
- आम बोलचाल की भाषा से निर्मित छोटे एवं बोधगम्य संवाद
- पात्रानुकूल संवाद-योजना
- प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली संवाद

❖ देशकाल एवं वातावरण :-

- सन् 1947 ई. में भारत विभाजन के समय पर आधारित कथानक
- भारत विभाजन के समय साम्प्रदायिक दंगों का विश्वसनीय चित्रण
- उपन्यास में तात्कालीन भारतीय समाज के धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक परिवेश का यथार्थ चित्रण
- विश्वसनीय और जीवंत वातावरण की निर्मिति

❖उद्देश्य:-

- भारत विभाजन के समय के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक यथार्थ की प्रस्तुति
- भारत-विभाजन के पीछे राजनीतिक स्वार्थ का चित्रण
- दंगों की विभीषिका का मार्मिक और यथार्थ अंकन

❖ निष्कर्ष:-

- तात्कालीन भारत के तीखे सामाजिक यथार्थ के चित्रण में सफल
- साम्प्रदायिक दंगों की विभीषिका का मार्मिक चित्रण
- यथार्थवादी दृष्टि से भारत विभाजन की त्रासदी की जीवंत प्रस्तुति

❖ सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

- तमस , भीषम साहनी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

- हिन्दी उपन्यास ; एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

धन्यवाद